Shri Lal Bahadur Shastri National Sanskrit University
(Central University)
B-4 Qutub Institutional Area, New Delhi- 110016

अंशकालिक कार्यक्रम

(प्रमाण पत्रीय एवं डिप्लोमा)

Part Time Programmes

(Certificate & Diploma)

श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विद्यापीठ

(मानित विश्वविद्यालय), कुतुब सांस्थानिक क्षेत्र नई दिल्ली- 110016

संशोधित नवीन पाठ्यक्रम

दिनांक : २९-३०/०१/२०१८

ज्योतिष विभाग, वेदवेदाङ्गसंकाय

ज्योतिष प्राज्ञ एकवर्षीय डिप्लोमा पाठ्यक्रम

<u>प्रथम सत्र</u>

प्रथम पत्र - १०० अंक

इकाई	विषय	अंक	अध्यापन दिन संख्या
I	**ज्योतिषशास्त्र का परिचय-** (उदभव, विकास, प्रर्वत्तक, स्कन्ध, एवं प्रमुख आचार्य एवं प्रमुख ग्रन्थ) पञ्चाङ्ग परिचय ।	25	8
II	अयनांश-साधन, पलभा-साधन, चरखण्ड-साधन, सूर्योदय-साधन, इष्टकाल-साधन, चालन, ग्रहस्पष्टीकरण, भयात-भभोगसाधन, चन्द्रस्पष्टीकरण, जन्माक्षर-ज्ञान, जन्मपत्रिका लेखनविधि, लंकोदयमान, स्वोदयमान, लग्न-साधन ।	25	8
III	नत-साधन, दशमलग्न-साधन, द्वादशभाव स्पष्टीकरण एवं चलितचक्रसाधन, द्वादश भावों से विचारणीय विषय तथा फलविचार की सामान्य विधि।	25	8
IV	**कारकांश लग्न साधन-** कारकांश कुण्डली निर्माण, स्थिर व चर कारक का परिचय व फलादेश में प्रयोग, कारकांश कुण्डली द्वारा द्वादशभाव फलादेश विचार।	25	8

<u>प्रथम सत्र</u>

द्वितीय पत्र - १०० अंक

इकाई	विषय	अंक	अध्यापन दिन

			संख्या
I	**कुण्डली मेलापक-** नक्षत्र मेलापक परिचय, अष्टकूट परिचय, वर्ण-वश्य-तारा-योनि व ग्रहमैत्री।	25	8
II	**गण-विचार, भकूट-विचार-** नाडी-विचार, गण, भकूट एवं नाडी दोष का परिहार, ग्रह मेलापक परिचय, माङ्गलिक विचार, माङ्गलिक दोष एवं परिहार।	25	8
III	**विवाह मुहूर्त-विचार-** त्रिबलशुद्धि-विचार, विवाह में ग्राह्य मास नक्षत्रादि विचार, विवाह में वर्जित कालज्ञान, विवाह में लग्न विचार, लग्नशुद्धि ज्ञान, ग्रहों के रेखाप्रदस्थान।	25	8
IV	**लत्तादिदशदोष निरूपण-** लत्ता, पात, युति, वेध, जामित्र, बाण, एकार्गल, उपग्रह, क्रान्तिसाम्य, दग्धातिथि, गोधूलि लग्न निर्णय, वधू प्रवेश द्विरागमन।	25	8

प्रथम-सत्र

तृतीय पत्र - १०० अंक

इकाई	विषय	अंक	अध्यापन दिन संख्या
I	मेषादि द्वादशलग्नों में उत्पन्न जातकों की विशेषतायें, चन्द्र राशि के अनुसार विभिन्न राशियों में उत्पन्न जातकों की विशेषतायें, द्वादश भावों में ग्रहों का सामान्य शुभाशुभ फल।	25	8
II	द्वादश लग्नों के लिए शुभाशुभ ग्रह, विभिन्न लग्नों के लिए कारक, मारक, शुभ, अशुभ, सम, केवलपापफलप्रद ग्रहों का विस्तृत परिचय।	25	8
III	**द्वादश भावोंका फलविचार-** तनुभावफल, धनभावफल, सहजभावफल, सुखभावफल, पञ्चमभावफल, षष्ठभावफल।	25	8

IV	जायाभावफल, आयुभावफल, भाग्यभावफल, कर्मभावफल, लाभभावफल, व्ययभावफल, भावेशफलकथन।	25	8

प्रथम-सत्रम्

चतुर्थ पत्रम्-१०० अङ्कः

शास्त्रीयाध्ययनम् (संस्कृत शिक्षण)

इकाई	विषय	अंक	अध्यापन दिन संख्या
I	लघुजातक (अध्याय एक से दो)	25	8
II	लघुजातक (अध्याय तीन से चार)	25	8
III	**भाग- 1 शब्द रूप** (क) राम, नदी, लता, कर्मन्, किम्, अस्मद्, युष्मद्, भवत्, तत्, इदम्, कर्तृ, शब्द रूप (पु. /स्त्री./नपुं.) **धातुरूप** (ख) भू, पठ, गम्, कृ, अस् (लट्-लृट्-लङ्-लोट्- विधिलिङ्ग)	25	8
IV	**भाग-2** कारक प्रकरण कारकों का प्रयोग	25	8

ज्योतिष प्राज्ञ एकवर्षीय डिप्लोमा पाठ्यक्रम

<u>द्वितीय सत्र</u>

प्रथम पत्र - १०० अंक

इकाई	विषय	अंक	अध्यापन दिन संख्या
I	**विंशोत्तरी महादशा-** जन्म नक्षत्रानुसार दशाज्ञान, सूर्यादिग्रहों के दशा वर्ष, भुक्त-भोग्य दशा साधन, अन्तर्दशा साधन।	25	8
II	**अष्टोत्तरी व योगिनी दशा साधन-** अष्टोत्तरी व	25	8

	योगिनी दशा का भुक्त भोग्य दशा ज्ञान व अन्तर्दशा साधन ।		
III	प्रत्यन्तर्दशा-सूक्ष्मदशा-प्राणदशा साधन, चन्द्र स्पष्ट द्वारा सारिणी से दशा का भुक्त भोग्य ज्ञान ।	25	8
IV	**दशाफल विचार**- दशाफल, अन्तर्दशाफल, प्रत्यन्तर्दशाफल, सूक्ष्मदशाफल, प्राणदशाफल, पराशरोक्त दशाफ़ल विधि।	25	8

द्वितीय सत्र

द्वितीय पत्र - १०० अंक

इकाई	विषय	अंक	अध्यापन दिन संख्या
I	**मुहूर्तशास्त्र का स्वरूप**- काल का स्वरूप, काल के एकादश भेद- वर्ष, अयन, ऋतु, मास व पक्ष तथा पञ्चाङ्ग का परिचय तथा मुहूर्त में इनका प्रयोग।	25	8
II	**पञ्चाङ्ग द्वारा मुहूर्त निकालने की विधि**- नक्षत्रों की विभिन्न संज्ञायें (चर, स्थिर, क्षिप्र, मृदु, तीक्ष्णादि) सौर और चान्द्रमास में मुहूर्त विचार, मुहूर्तों में वर्जित काल ज्ञान।	25	8
III	**संस्कारों में मुहूर्त विचार**- नामकरण, अन्नप्राशन, मुण्डन, चूड़ाकरण, उपनयन, विद्यारम्भ व विवाहादि त्रिबल शुद्धि एवं लग्न शुद्धि विचार।	25	8
IV	**अन्य शुभ कार्यों में मुहूर्त विचार**- यात्रा, गृहारम्भ, गृहप्रवेश, क्रय-विक्रय विपणि व्यापार मुहूर्त, नामांकन मुहूर्त राज्याभिषेक मुहूर्त।	25	8

द्वितीय सत्र

तृतीय पत्र - १०० अंक

इकाई	विषय	अंक	अध्यापन दिन संख्या
I	**प्रश्नशास्त्र**-दैवज्ञलक्षण, जातक और प्रश्न में भेद,	25	8

	प्रश्नकर्त्ता, प्रश्न पूछने की रीति, पृच्छक सरल या वक्रचित्त होने का योग भावानुसार विचारणीय विषय, भाव के अंग विचार, राशिगुणधर्म, ग्रहगुणधर्म, अप्रकाश ग्रह विचार।		
II	लग्नानुसार शरीर लक्षण, नक्षत्रानुसार शरीर अंग, देष्काण के अनुसार शरीर अंग, राशि स्वरूप व चरादि भेद, ग्रहबल, दीप्तादि अवस्था, ग्रहफल विचार, संयुक्त असंयुक्तादि प्रश्न।	25	8
III	अक्षर द्वारा लग्न विचार, पुष्प द्वारा लग्न विचार, आरुढ़लग्न, चन्द्र अवस्था, द्रेष्काण स्वरूप, प्रहरो में ग्रहों का स्वामित्व, प्रश्न द्वारा समय व दिन ज्ञान, ग्रह फलावधि व फल।	25	8
IV	कार्यसिद्धि फल समय, लाभालाभ फल, चतुष्पद विचार, धनलाभ प्रश्न, विवाहप्रश्न, स्त्री-पुरुष सम्बन्ध, गर्भ सम्बन्धी प्रश्न ।	25	8

द्वितीय-सत्रम्

चतुर्थ पत्रम्-१०० अङ्क

शास्त्रीयाध्ययनम् (संस्कृतशिक्षणम्)

इकाई	विषय	अंक	अध्यापन दिन संख्या
I	चमत्कारचिन्तामणि (सूर्य से भौम) पर्यन्त द्वादशभावस्थ फल	25	8
II	चमत्कारचिन्तामणि (बुध से शुक्र) " "	25	8
III	चमत्कारचिन्तामणि (शनि से केतु) " "	25	8
IV	**श्रीमद्भगवद्गीता** द्वितीयोऽध्यायः	25	8